44

नीचे तराई में

(17:14-27)

अध्याय 17 में आगे चलते हुए दृश्य ऊंचे पहाड़ से नीचे तराई में बदल जाता है। वे चेले जो पीछे रह गए थे, एक लड़के में से दुष्टात्मा नहीं निकाल पाए थे (17:14-21)। स्पष्टतया वह इसलिए नहीं निकाल पाए, क्योंकि परमेश्वर की सामर्थ पर भरोसा रखने के बजाय वे अपनी ही सामर्थ पर भरोसा रख रहे थे। उनके विश्वास की कमी उस पीढ़ी के लोगों का वर्णन करती है, और इसी कारण उन्हें यीशु की डांट सहनी पड़ी थी। इसके विपरीत, यीशु ने लड़के को तुरन्त चंगा कर दिया।

भीड़ के साथ इस दृश्य के बाद, यीशु जब गलील में ही था, उस ने अपने सिर पर मंडराती मृत्यु की भविष्यवाणी की (17:22, 23)। उस ने चेलों को उस भविष्य के लिए जिसका सामना उन्हें करना था तैयार करने के लिए इस समय और स्थान को चुका।

अध्याय के अन्त में, जब वे कफरनहूम में थे, कर देने के मुद्दे पर बात की गई (17:24-27)। कालांतर की तरह ही परमेश्वर को यीशु और उसके चेलों की आवश्यकताओं को पूरा करने वाले के रूप में दिखाया गया है।

दुष्टात्मा से ग्रस्त पुत्र की चंगाई (17:14-21)

लड़के को यीशु की चंगाई (17:14-18)

[14]जब वे भीड़ के पास पहुंचे, तो एक मनुष्य उस के पास आया, और घुटने टेक कर कहने लगा, [15]''हे प्रभु, मेरे पुत्र पर दया कर! क्योंकि उस को मिर्गी आती है; और वह बहुत दुःख उठाता है, और बार-बार आग में और बार-बार पानी में गिर पड़ता है। [16]मैं उस को तेरे चेलों के पास लाया था, पर वे उसे अच्छा नहीं कर सके।'' [17]यीशु ने उत्तर दिया, ''हे अविश्वासी और हठीले लोगो, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा? कब तक तुम्हारी सहूंगा? उसे यहां मेरे पास लाओ।'' [18]तब यीशु ने दुष्टात्मा को डांटा और उस में से निकल गया और लड़का उसी घड़ी अच्छा हो गया।

दृश्य महिमा की चोटी से निराशा की तराई में बदल जाता है। मरकुस रचित सुसमाचार कुछ अतिरिक्त विवरण देता है जो पाठक को इस विषय को और अच्छी तरह से दिखने में सहायक होते हैं। जब यीशु और तीन प्रेरित पहाड़ से नीचे आए, तो उन्हें एक अस्त-व्यस्त भीड़ मिली। नौ प्रेरित जिन्हें वे छोड़कर गए थे इस शोरगुल भरी भीड़ में थे (मरकुस 9:14-16)। एक परेशान पिता ने इस उम्मीद से कि यीशु उसके लड़के को चंगा कर सकता है, दुष्टात्मा से ग्रस्त अपने

लड़के को उसके पास लाने की कोशिश की। यीशु वहां नहीं था, इस कारण उस आदमी ने अपने लड़के की चंगाई का काम प्रेरितों को दे दिया, जो वहां थे। उस ने ऐसे प्रयासों में उनकी सफलता की बातें सुनी होंगी (मरकुस 6:13)। पिछले परिणाम चाहे जो भी रहे हों, पर इस बार वे बुरी तरह से नाकाम हो गए।

नौ प्रेरित भीड़ में घिरे हुए और शास्त्री उनसे बहस कर रहे थे (मरकुस 9:14)। बेशक उन्होंने प्रेरितों को दुष्टात्मा को न निकाल पाने पर डांट ही लगाई होगी। यीशु के अचानक आ जाने पर भीड़ चकित रह गई और वे भागकर उसके आस पास इकट्ठा होने लगे (मरकुस 9:15)। वे इतने चकित क्यों थे? क्या पहाड़ पर जो उसे महिमा मिली थी वह अभी भी उसके साथ थी, वैसे ही जैसे सीनै पहाड़ से नीचे आने पर मूसा के चेहरे पर थी (निर्गमन 34:29-35)? इस पर बहस हो सकती है पर यीशु के नीचे उतरने और मूसा के नीचे उतरने के बीच कोई समानता नहीं। व्यवस्था देने वाला सीनै पहाड़ से, जहां उस ने परमेश्वर की महिमा से नीचे तराई में अव्यवस्था में आया था। नौ चेलों की तरह, मूसा के साथी जिन्हें कार्यभार सौंपा गया था (हारून और हूर) अपने विश्वास के सम्बन्ध में डगमगा गए थे (निर्गमन 24:12-18; 32:1-35)।

आयतें 14, 15. आकर यीशु ने शास्त्रियों से पूछा कि वे चेलों से किस बात की चर्चा कर रहे थे (मरकुस 9:16)। यहां पर दुष्टात्मा से ग्रस्त लड़के का पिता अपने **पुत्र पर दया** की विनती के लिए **आया** और **यीशु** के सामने घुटने टेक दिए। इस व्यक्ति ने वास्तव में शास्त्रियों से किए गए यीशु के प्रश्न के उत्तर में भीड़ में से पुकारा था (मरकुस 9:17; लूका 9:38)। उस ने यीशु से विनती की, ''हम पर तरस खाकर हमारा उस कार कर'' (मरकुस 9:22)।

पिता ने यीशु को अपने पुत्र की हालत ब्यान की: **''क्योंकि उस को मिर्गी आती है; और वह बहुत दुःख उठाता है, और बार-बार आग में और बार-बार पानी में गिर पड़ता है।''** मिर्गी के लिए अंग्रेजी भाषा के शब्द ''lunatic'' के पीछे का यूनानी भाषा का शब्द (*selēniazomai*) ''चांद'' (*selēnē*) के लिए शब्द से सम्बन्धित है।[1] कुछ प्राचीन संस्कृतियों में मान्यता थी कि मानसिक और शारीरिक रोग चंद्रमा के कुछ चरणों के कारण होते हैं। अंधा और गूंगा होने के अलावा यह लड़का मिर्गी के दौरों से भी पीड़ित लगता है (मरकुस 9:17, 18, 25; लूका 9:39, 42)। ये दौरे उसके जीवन के लिए खतरा थे, क्योंकि इनसे वह कभी आग में और कभी पानी में गिर पड़ता था (मरकुस 9:18, 22)। इस स्थिति ने उसके लिए सामान्य जीवन जीना असम्भव बना दिया गया होगा। लड़के की स्थिति का कुछ वर्णन प्राकृतिक कारणों के द्वारा समझाया जा सकता था पर वचन इस बात को स्पष्ट कर देता है कि वह दुष्टात्मा के वश में था जो उसे बचपन से सता रही थी (मरकुस 9:21, 25)।

आयत 16. स्वाभाविक है कि दुष्ट आत्मा से पीड़ित अपने पुत्र में से यीशु के **चेलों** के द्वारा दुष्टात्मा को न निकाल पाने के कारण वह पिता परेशान था। उस ने उन्हें अन्य नबियों के छात्रों से जो दुष्टात्माओं को निकालने की योग्यता होने का दावा करते थे अलग करते हुए **तेरे** चेले कहा (12:27 पर टिप्पणियां देखें)। लड़के की स्थिति की गम्भीरता से उसके पिता की निराशा को समझा जा सकता है।

बेशक, यीशु के बारे में लोगों से सुनने के कारण यह पिता बड़ी उम्मीदें लेकर आया था कि प्रभु उसके पुत्र को चंगा कर देगा और कम से कम उसके परिवार को सामान्य जीवन का

अवसर मिलेगा। अब क्योंकि चेले उसे चंगा नहीं कर पाए इस कारण वह डर गया होगा कि यीशु भी उस की सहायता कर पाएगा या नहीं। पिता और यीशु के बीच हुई बातचीत का मरकुस का विवरण इस बात का सुझाव देता है कि बात ऐसी थी। पिता ने यह कहते हुए कि ''यदि तू कुछ कर सकता है, तो हम पर तरस खा और हमारी सहायता कर'' यीशु से सहायता की भीख मांगी! यीशु ने उसे यह कहते हुए उत्तर दिया कि ''विश्वास करने वाले के लिए सब कुछ हो सकता है'' (मरकुस 9:23)। पिता ने ''तुरन्त गिड़गिड़ाकर कहा; हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं, मेरे अविश्वास का उपाय कर'' (मरकुस 9:24)।

आयत 17. यीशु की कड़ी भाषा बेशक चेलों सहित वहां उपस्थित सब लोगों के लिए थी। मन की पीड़ा में उस ने अफ़सोस जताया, **''हे अविश्वासी और हठीले लोगो, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा? कब तक तुम्हारी सहूंगा? उसे यहां मेरे पास लाओ।''** उनके विश्वास और आत्मिकता की कमी यीशु के लिए भारी बोझ था। ''अविश्वासी और हठीले लोग'' वाक्यांश में व्यवस्थाविवरण 32:5, 20 में विद्रोही इस्राएल के वर्णन के लिए इस्तेमाल की गई भाषा की तरह ही है (देखें मत्ती 12:39; 16:4; प्रेरितों 2:40; फिलिप्पियों 2:15)।

आयत 18. मरकुस और लूका दोनों ही संकेत देते हैं कि जब लड़के को यीशु के पास लाया जा रहा था, तो दुष्ट आत्मा ने दौरे से उसे जमीन पर पटक दिया (मरकुस 9:26; लूका 9:42)। मत्ती के विवरण में केवल इतना कहा गया है कि **यीशु ने दुष्टात्मा को डांटा और उस में से निकल गया और लड़का उसी घड़ी अच्छा हो गया**। मरकुस कहता है कि यीशु की आज्ञा से, दुष्टात्मा उसी समय लड़के में से निकलकर उसे मूर्छित छोड़ गई। इस दृश्य को देखने वालों ने समझा कि वह मर गया है (मरकुस 9:26)। तभी यीशु ने उस का हाथ पकड़कर उसे जिला दिया और उसे उसके पिता को लौटा दिया (मरकुस 9:27; लूका 9:42)। जिस कारण ''सब लोग परमेश्वर के महासामर्थ से चकित हुए'' (लूका 9:43)।

चेलों की नाकामी की यीशु की व्याख्या (17:19-21)

[19]तब चेलों ने एकान्त में यीशु के पास आकर कहा, ''हम इसे क्यों नहीं निकाल सके?'' [20]उस ने उन से कहा, ''अपने विश्वास की घटी के कारण, क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूं, यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो, तो इस पहाड़ से कह सकोगे कि यहां से सरककर वहां चला जा, तो वह चला जाएगा; और कोई बात तुम्हारे लिए असम्भव न होगी। [21][पर यह जाति बिना प्रार्थना और प्रवास के नहीं निकलती।]''

आयत 19. लड़के में से दुष्टात्मा निकल जाने के बाद **चेले एकांत में यीशु पास आए**। मरकुस 9:28 बताता है कि घटना का यह भाग एक घर में घटा था। चेलों ने प्रभु से पूछा, **''हम उसे क्यों नहीं निकाल सके**?'' यूनानी भाषा ''हम'' पर ज़ोर दिया गया है। स्पष्टतया यीशु से आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ पाने के बाद वे हमेशा दुष्टात्माओं को सफलता से निकाल लेते थे (मरकुस 6:7, 13)।

आयत 20. उनके प्रश्न के उत्तर में यीशु ने पहले उन्हें बताया कि वे दुष्टात्मा को **अपने विश्वास की घटी के कारण** नहीं निकाल सके थे। यीशु ने उन्हें उनके विश्वास के छोटेपन

के कारण डांट लगाई थी (6:30; 8:26; 14:31; 16:8)। उस ने आगे कहा कि यदि उनका **विश्वास राई के दाने के बराबर भी** होता तो वे **पहाड़** को **सरका** सकते थे। राई का बीज अपने छोटे होने के लिए कहावत के रूप में इस्तेमाल किया जाता था (13:31, 32 पर टिप्पणियां देखें), जबकि पहाड़ को इसके आकार और स्थिरता के लिए जाना जाता था। एक बार फिर यीशु के उदाहरण में एक बहुत छोटी चीज़ को एक बहुत बड़ी चीज़ से अलग बताया गया (देखें 7:3, 4; 19:24; 23:24)।

यीशु अपने चेलों को सचमुच में पहाड़ों को सरकाने का तरीका नहीं बता रहा था। ऐसा करतब करने के उसके या उसके चेलों के किसी प्रयास के विचार का समर्थन करता कोई प्रमाण नहीं है। यह कहना कि कोई ''पहाड़ों को हिला'' सकता है नामुमकिन लगने वाली रुकावटों पर विजय पाने की व्यक्ति की योग्यता को जताने का एक आम तरीका था (21:21; 1 कुरिन्थियों 13:2)। विलियम बार्कले ने लिखा है:

> एक महान गुरु जो सचमुच में पवित्र शास्त्र को समझा और व्याख्या कर सकता था और जो समस्याओं को समझाकर उन्हें सुलझा सकता था, निरन्तर उसे पहाड़ों का *उखाड़ देने वाला* या यहां तक कि *चूर-चूर कर देने वाला* के रूप में जाना जाता था। पहाड़ों को चीर देना, उखाड़ देना, चूर चूर कर देना कठिनाइयों को दूर करने के लिए इस्तेमाल होने वाले वाक्यांश थे। यीशु ने कभी नहीं चाहा कि इसका अर्थ शारीरिक रूप में या अक्षरश: लिया जाए। ... उस ने जो चाहा वह यह है कि ''यदि तुम्हारा इतना विश्वास है, तो सब समस्याएं सुलझ सकती हैं, यहां तक कि कठिन से कठिन काम भी पूरा हो सकता है।'' लोगों को कठिनाई की उन पहाड़ियों को हटाने के लिए जो उनके मार्ग में रोड़ा बनती हैं, योग्य बनाने का काम परमेश्वर में विश्वास ही कर सकता है।[2]

वचन की इस समझ को समर्थन यीशु के आश्वस्त करने वाले शब्दों से मिलता है कि ''**कोई बात तुम्हारे लिए असम्भव न होगी**।'' सम्भवतया चेले यह भूलकर कि उन्हें परमेश्वर की ओर से सामर्थ मिली है, अपनी ही सामर्थ पर निर्भर हो रहे थे।

आयत 21. उनकी नाकामी के लिए दी गई यीशु की दूसरी व्याख्या थी कि दुष्टात्मा की **इस जाति** से निपटना कठिन था और इसे निकालने के लिए बहुत **प्रार्थना और उपवास** की आवश्यकता होनी थी। भाषा से संकेत मिलता है कि दुष्टात्माओं की अलग-अलग श्रेणियां होती हैं जिनमें अलग-अलग शक्ति पाई जाती है।

एक सवाल खड़ा किया गया है कि आयत 21 को वचन में शामिल किया जाए या नहीं, क्योंकि कई प्राचीन हस्तलेखों में यह नहीं मिलती है। NASB में भी इस आयत को शामिल तो किया गया है पर हिंदी की तरह ही कोष्ठक में रखा गया है। ब्रूस एम. मैज़गर ने मान लिया कि प्रति बनाने वालों ने इसे मरकुस 9:29 से लेते हुए आयत में जोड़ दिया। उस वचन में यीशु ने कहा, ''यह जाति बिना प्रार्थना किसी और उपाय से नहीं निकल सकती।'' परन्तु मरकुस के कुछ प्राचीन हस्तलेखों में ''उपवास'' शब्द शामिल किया गया है (देखें KJV)।[3]

सिर पर मंडराती अपनी मृत्यु की यीशु की दूसरी घोषणा (17:22, 23)

[22]जब वे गलील में थे, तो यीशु ने उनसे कहा, ''मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा; [23]वे उसे मार डालेंगे, और वह तीसरे दिन जी उठेगा।'' इस पर वे बहुत उदास हुए।

आयतें 22, 23. यीशु ने पृथ्वी पर अपने जीवन के शेष दिनों में लोगों के साथ कम और अपने प्रेरितों के साथ अधिक समय बिताया। इस समय के दौरान वह अपनी आने वाली नीतियों के बारे में उन्हें बार-बार चिताता रहता था। ये आयतें उसके दूसरी बार उन्हें इस घटना के बारे में बहुत साफ-साफ कहने की बात बताती हैं (16:21 पर टिप्पणियां देखें)।

दुख भोगने की यह भविष्यवाणी पहले वाली भविष्यवाणी से अधिक संक्षिप्त है। इसके अलावा प्राचीनों, प्रधान याजकों और शास्त्रियों का नाम नहीं दिया गया, जो उसके दुख भोगने और मृत्यु के लिए जिम्मेदार थे। यीशु ने यह कहते हुए कि वह **मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा** एक नया विवरण दे दिया। प्रभु यहूदा द्वारा अपने पकड़वाए जाने की ही बात कर रहा होगा, चाहे उस ने नाम लेकर इस प्रेरित का उल्लेख नहीं किया।[4] पहले उसे यहूदी अगुओं के हाथों में सौंपा जाना था। उन्होंने ही यहूदा के साथ उसे पकड़वाने का षड्यन्त्र रचना था (26:47, 48)। मन्दिर के रखवालों ने जो महासभा के अधीन थे (''प्रधान याजकों के प्यादों''; यूहन्ना 18:3), बाद में यीशु को पकड़ना था।[5] एक के बाद एक दिखावटी पेशी, दुर्व्यवहार और उस की निंदा का काम यहूदियों ने ही करना था (26:57-68; यूहन्ना 18:12-14) और फिर उसे क्रूस पर चढ़ाने की मांग करते हुए पिलातुस को सौंप देना था (27:1, 2, 19-23)।

यीशु ने भविष्यवाणी की कि **वह तीसरे दिन जी उठेगा** (16:21 पर टिप्पणियां देखें)। यह भविष्यवाणी उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद तीसरे दिन सुबह मुर्दों में से जी उठने पर पूरी हुई थी। यीशु को शुक्रवार के दिन क्रूस पर चढ़ाया गया था और 6:00 बजे शाम से पहले क्रूस पर से उतार लिया गया था ताकि उसे सब्त आरम्भ होने से पहले पहले दफना दिया जाए (27:57-61; मरकुस 15:42-47; लूका 23:50-55; यूहन्ना 19:31-42)। उस की देह पूरा सब्त का दिन कब्र में रही (27:62-66; लूका 23:56)। फिर वह सप्ताह के पहले दिन सुबह-सुबह जी उठा (28:1-7; मरकुस 16:1-8; लूका 24:1-7; यूहन्ना 20:1-9)।

प्रेरित यीशु की भविष्यवाणी को नहीं समझे थे, विशेषकर अपने जी उठने से सम्बन्धित भाग को (मरकुस 9:32)। उनका ध्यान उस की भविष्यवाणी पर था कि लोग **उसे मार डालेंगे** और इससे **वे बहुत उदास हुए**।

कर देना (17:24-27)

[24]जब वे कफरनहूम में पहुंचे, तो मन्दिर का कर लेने वालों ने पतरस के पास आकर पूछा, ''क्या तुम्हारा गुरु मन्दिर का कर नहीं देता?'' [25]उस ने कहा, ''हां देता तो है।'' जब वह घर में आया, तो यीशु ने उसके पूछने से पहिले उस से कहा, ''हे शमौन, तू क्या सोचता

है? पृथ्वी के राजा महसूल या कर किन से लेते हैं? अपने पुत्र से या परायों से?'' [26]पतरस ने उन से कहा, ''परायों से।'' यीशु ने उस से कहा, ''तो पुत्र बच गए। [27]तौभी इसलिए कि हम उन्हें ठोकर न खिलाएं, तू झील के किनारे जाकर बंसी डाल, और जो मछली पहिले निकले, उसे ले; उस का मुंह खेलने पर तुझे एक सिक्का मिलेगा, उसी को लेकर मेरे और अपने बदले उन्हें दे देना।''

आयत 24. कैसरिया फिलिप्पी में जाने के बाद (16:13) और रूपांतर पर्वत पर होने पर (17:1) यीशु और उसके प्रेरित गलील की ओर मुड़ गए (17:22) और **कफरनहूम** जा पहुंचे। यह इस नगर में प्रभु का अन्तिम बार जाना होना था, जो यरूशलेम में मरने के लिए जाने से पहले उस की सेवकाई के कामों का केन्द्र रहा था (देखें 19:1; 21:1)।

मन्दिर का कर दो द्राखमा[6] था। मूल में यह व्यवस्था द्वारा लगाया गया आवश्यक कर (आधा शेकेल) था जिससे मन्दिर के कार्य और मरमत का खर्च पूरा हो जाता था (निर्गमन 30:11-16) यह बहस का सवाल है कि यह कर वार्षिक कर होने के लिए बनाया गया था या नहीं। व्यवहार में ऐसा लगता है कि कर अस्थाई रूप में दिया गया था। परन्तु यह कर आवश्यक स्थितियां उत्पन्न होने पर फिर से लगा दिया जाता था (2 इतिहास 24:6, 9; नहेम्याह 10:32)।[7] मसीह के समय तक यह कर बीस या इससे अधिक की उम्र के सब पुरुषों से हर साल इकट्ठा किया जाता था।

कर लेने वाले यरूशलेम से आने वाले मन्दिर के अधिकारी होते थे। अदार के महीने में फसह से थोड़ा पहले (निसान के महीने में) उन्हें पूरे इस्राएल में कर एकत्र करने के लिए भेजा जाता था। कर बिखरे हुए यहूदियों से भी एकत्र किया जाता था।[8] रोमी लोग यहूदी अगुओं को यह कर लगाना जारी रखने की अनुमति देते थे। 70 ईस्वी में मन्दिर के विनाश के बाद वैस्पेसियन ने रोम में जुपिटर कैपितोनिमुस के मन्दिर के लिए इस दो द्राखमा कर को आवश्यक बनाया।[9] देश भक्ति का प्रतीक बनने के बजाय कर यहूदियों के रोम के अधीन होने को याद दिलाने वाला बन गया।

एक बार फिर, **पतरस** इस दृश्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है (देखें 14:28-32; 15:15; 16:16-19, 22, 23; 17:4)। कर एकत्र करने वालों ने उससे पूछा, **''क्या तुम्हारा गुरु मन्दिर का कर नहीं देता?''** इस प्रश्न की यूनानी संरचना, जिसमें नकारात्मक अंश *ou* संकेत देता है कि पक्का उत्तर मिलने की उम्मीद थी। लियोन मौरिस का मानना था कि ये कर एकत्र करने वाले लोग पतरस को नम्रता पूर्वक याद दिला रहे थे कि कर देय था।[10] इसके विपरीत माइकल जे. विलकिन्स ने कहा है कि उनके प्रश्न में पतरस (और यीशु) को फंसाने की गुप्त चाल थी। आखिर यहूदियों ने इस पर बहस की थी कि कर का देनदार कौन था।[11] ऐसा हो सकता है कि ये अधिकारी यह आरोप साबित करने की कोशिश कर रहे थे कि यीशु मन्दिर के प्रति वफ़ादार नहीं था।[12]

आयत 25. जब उन्होंने यीशु से मन्दिर का कर देने पर सवाल किया तो पतरस ने उत्तर दिया, **''हां, देता है।''** पतरस लगभग तीन साल से यीशु के साथ था इसलिए उस ने उसे पिछले अवसरों पर वार्षिक कर देते अवश्य देखा होगा।

जब पतरस उस **घर में आया, तो यीशु ने उसके पूछने से पहले ही उससे कहा**। वह पतरस को अवसर मिलने से पहले ही बातें करने लगा। प्रभु ने बाहर से या इसके बारे में आश्चर्यकर्म के ज्ञान के द्वारा उनकी बातचीत को सुना हो सकता है (देखें 9:4; 12:25)। यीशु ने **''हे शमौन, तू क्या सोचता है** ?'' कहते हुए प्रश्न का आरम्भ किया। आम तौर पर वह ऐसे प्रश्न का इस्तेमाल किसी बात पर अपने सुनने वालों की सोच को उभारने के लिए करता था (18:12; 21:28; 22:42)। उस ने आगे कहा, **''पृथ्वी के राजा महसूल या कर किन से लेते हैं? अपने पुत्र से या परायों से** ?'' यह रूपक ''पृथ्वी के राजाओं'' या मूर्तिपूजक शासकों के व्यवहारों पर आधारित है (1 राजाओं 4:34; भजन संहिता 2:2)। विभिन्न प्रकार के करों का उल्लेख मिलता है। ''महसूल'' (*telos*) चीज़ों पर लगाए जाने वाले कर के लिए (9:9) जबकि ''मन्दिर का कर'' (*kēnsos*) जनसंख्या पर आधारित कर देने के लिए है (22:17)। इसे लातीनी भाषा के शब्द *census* से लिया गया है।

आयत 26. पतरस ने उन से कहा, ''परायों से।'' यीशु ने उस से कहा, ''तो पुत्र बच गए।'' किसी हाकिम के अपनी प्रजा को उसके राज्य में कर से छूट होती थी। यीशु परमेश्वर का पुत्र था (16:16; 17:5) और मन्दिर उसके ''पिता का घर'' था (लूका 2:49; यूहन्ना 2:16; देखें 12:6) इस कारण उसे मन्दिर का कर देने से छूट होनी चाहिए थी। आखिर परमेश्वर ने अपने ही पुत्र से कर नहीं लेना था। न उस ने उनसे कर लेना था जिन्हें उस ने अपने पुत्रों के रूप में अपने परिवार में गोद ले लिया था यानी यीशु के चेलों से कर नहीं लेना था।

आयत 27. यीशु ने सुझाव दिया कि वे कर दें ताकि मन्दिर के अधिकारियों को **ठोकर न** लगे। यीशु ने चाहे अपने चेलों को बेवजह लोगों को ठोकर न दिलाने की शिक्षा दी (18:5-7), कई बार विश्वास के मामलों में यीशु ने दूसरों को ठोकर देना आवश्यक समझा (13:57; 15:12-14)।

यह कर चुकाने के लिए धन सबसे असामान्य ढंग से लिया गया। प्रभु ने पतरस से कहा **तू झील के किनारे जाकर बंसी डाल**। सुसमाचार के विवरणों में विभिन्न प्रकार के जालों के साथ गलील की झील में मछली पकड़ने के कई हवाले मिलते हैं। पर बंसी डालकर मछली पकड़ने का यही एक हवाला है। पतरस के **पहले** पकड़ी गई **मछली** का **मुंह खोलने** पर उस में से उसे **एक सिक्का मि**लना था, जिससे उस ने अपने और प्रभु के लिए कर चुकाना था।[13]

''सिक्का'' मूलतया ''सटाटेर'' (*statēr*) चार द्राखमा की कीमत जितना था।[14] दो जनों के लिए दो द्राखमा (आधा शेकेल) देना ही काफी था। दो द्राखमा एक शेकेल या सिक्का होता था जिसे यीशु के समय में कभी ढाला नहीं जाता था इस कारण दो लोगों को मिलाकर चार द्राखमा या *सटाटेर* स्वीकार कर लिया जाता था।[15]

प्रभु के आश्चर्यकर्म में कई निराली विशेषताएं हैं। यह उसके लिखित आश्चर्यकर्मों में से केवल एक है जिसमें (1) धन था, (2) उस का कोई निजी लाभ था, (3) केवल एक ही मछली थी, और (4) के परिणाम लिखे नहीं गए, जैसे कि मछली के सचमुच में पकड़े जाने की बात। परिणाम चाहे लिखे नहीं गए, पर आश्चर्यकर्म हुआ अवश्य, क्योंकि यीशु ने कहा कि यह होगा।

यह आश्चर्यकर्म अपने बच्चों के लिए परमेश्वर के उपाय को रेखांकित करता है। अंजीर

के पेड़ के सूखने की तरह (21:19), इस आश्चर्यकर्म में भी एक बुनियादी सच्चाई का ''चिह्न'' दिया गया।[16] वह सच्चाई यह है कि परमेश्वर अपनों के लिए उपाय करता है। क्रेग एस. कीनर ने इसे इस प्रकार से कहा है: ''राजा की संतान कर चुका सकती है क्योंकि राजा उन्हें कर चुकाने के लिए धन देता है।''[17]

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

राई के बीज के नियम (17:20)

जब हम शक्तिशाली चीज़ों पर विचार करते हैं तो अधिकतर हमारे ध्यान में बड़ी-बड़ी बातें ही आती हैं। परन्तु यीशु ने अपने प्रेरितों को छोटी-छोटी बातों की सामर्थ बताई। यीशु के शब्दों में, राई का बीज इतना छोटा होने के बावजूद सामर्थी और शक्तिशाली है (13:31, 32; लूका 17:6)। इस छोटे से बीज के लिए अपने काम को पूरा करने के लिए पहले बोया जाना आवश्यक है।

17:20 में हमारे प्रभु के संक्षिप्त कथन में हमें राई के बीज के कई नियमों का पता चलता है। इन नियमों के लिए विश्वास का होना आवश्यक है (17:14-21)। आइए उनमें से कुछ की समीक्षा करते हैं।

1. बहुत करने के लिए थोड़ा करना आवश्यक है।

2. अच्छी उपज लेने के लिए तैयारी करते रहना और बोने में लगे रहना आवश्यक है।

3. हम परमेश्वर के वचन को सीखकर और सिखाकर, प्रार्थना करके, दूसरों के साथ सुसमाचार को बांटकर, अपने साधनों और अपने आपको देकर, आवश्यकता में पड़े लोगों की सहायता करके और अपनी आशिषों के लिए धन्यवाद देकर ''राई के बीज'' बोते हैं।

4. राई का बीज बोने के लिए हमारा बोलते रहना आवश्यक है न कि केवल सोचते रहना। इसमें न केवल बातें करना बल्कि काम करना शामिल है। इसमें अनुकूल परिस्थितियां होने पर बोना आवश्यक है।

टिप्पणियां

[1]अंग्रेजी भाषा का शब्द ''lunatic'' लातीनी भाषा के शब्द *lunaticus* से लिया गया है जो ''चांद'' के लिए लातीनी शब्द (*luna*) से भी सम्बन्धित है। [2]विलियम बार्कले, *द गॉस्पल अकार्डिंग टू मैथ्यू,* अंक 2, 2रा संस्क., द डेली स्टडी बाइबल (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1958), 184-85. देखें टालमुड *सेनहेड्रिन* 24ए; *बाबा बथरा* 3बी; *बेराक्रोथ* 64ए। [3]ब्रूस एम. मैज़गर, *ए टैक्सचुअल कमैंट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट,* 2रा संस्क. (स्टटगर्ट: जर्मन बाइबल सोसायटी, 1994), 35, 85. [4]''छुड़ाना'' के लिए यूनानी शब्द (*paradidōmi*) का इस्तेमाल सुसमाचार के विवरणों में आम तौर पर यहूदा के धोखे के लिए किया जाता है। परन्तु यह शब्द अन्य संदर्भों में मिलता है जो अपने पुत्र को दुख और मृत्यु सहने देने की परमेश्वर की स्वयं की पसंद को दिखाता है (यशायाह 53:6, 12 [LXX]; रोमियों 4:25; 8:32)। [5]यीशु को पकड़ने के लिए जाने पर इन यहूदी अधिकारियों के साथ रोमी सिपाही भी थे (यूहन्ना 18:3, 12)। [6]पहली सदी ईस्वी में दिद्राखमा के सिक्के की कीमत आधा शेकेल थी। (जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 3.8.12.) [7]मिशनाह *शेकालिम* 2.4. [8]वही., 1.1, 3; जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 16.2.3;

16.6.2–5; 18.9.1. [9]जोसेफस *वार्स* 7.6.6; डायो केसियस *रोमन हिस्ट्री* 65.7.2; सुटोनियुस *लाइव्स ऑफ द सीज़र्सः डोमिशियन* 12.2. [10]लियोन मौरिस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 452.

[11]मिशनाह के अनुसार लेवी, इस्राएली, यहूदी मत धारण करने वाले और स्वतन्त्र हुए दास कर देने के लिए जिम्मेदार थे। स्त्रियों, दासों और अव्यस्कों पर कर लागू नहीं होता था, पर उनका धन स्वीकार कर लिया जाता था। एक सवाल रह जाता है कि याजकों के लिए कर देना स्वीकार्य था या नहीं। अन्यजातियों और सामरियों से धन स्वीकार नहीं किया जाता था। (मिशनाह *शेक्कालिम* 1.3–5.) मृत सागर से मिले पत्रों के अनुसार, कुमरान में रहने वाला समुदाय वार्षिक रूप में लेने के बजाय जीवन भर में एक ही बार मन्दिर का कर देता था। (*ऑर्डिनेंस ऑन बिबलिकल लॉस*।) [12]*जौंडरवन इलस्ट्रेटिड बाइबल बैकग्राउंड्स कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूक,* सम्पा. कलिंटन ई. अरनोल्ड (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः जौंडरवन, 2002), 110 में माइकिल जे. विलकिन्स, ''मैथ्यू।'' [13]मछलियों में से छाप वाली अंगूठी और बहुमूल्य पत्थर जैसी कीमती चीज़ों के मिलने के उदाहरण प्राचीन साहित्य में भी मिलते हैं। (हेरोदोतस 3.41, 42; टालमुड *शब्बथ* 119ए।) [14]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 3.8.2. [15]डेविड हिल, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द न्यू सेंचुरी बाइबल कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 271–72. [16]देखें डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 14–28,* वर्ड बिबलिकल कमैंट्री, अंक 33बी (डलासः वर्ड बुक्स, 1995), 512. [17]क्रेग एस. कीनर, *ए कमैंट्री ऑन द गास्पल ऑफ मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1999), 446.